इस्लाम की बुनियाद

मुहम्मद अज़हर मदनी

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर रखी गई हैः १. इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं ३. नमाज़ काइम करना ४. ज़कात देना ५. रमज़ान के रोज़े रखना ५. अल्लाह के घर का हज करना। (तिर्मिज़ी)

अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब यह है कि कुरआन व हदीस में अल्लाह के बारे में जो कुछ बयान किया गया है उसके अनुसार अल्लाह को हर एतबार से एक मानना और रसूल पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि यह मान लिया जाये कि आप अल्लाह के अंतिम दूत हैं और इन्होंने सच्चे मार्ग पर चलने के लिये जो शिक्षाएं और उपदेश दिया है उन पर अमल किया जाए।

नमाज़ काइम करने का मतलब यह है कि इस्लाम ने हमें जिस तरह से नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया है उसके अनुसार नमाज़ों को अदा करें, अगर इसके अनुसर अमल न किया जाए तो इसका मतलब यह है कि हम लोग नमाज़ की अहमियत को पूरी तरह समझ नहीं रहे हैं और कोताही कर रहे हैं लेकिन नमाज़ के छोड़ने पर अल्लाह ने सजा की चेतावनी दी है।

साल भर में मुसलमानों पर ३० दिनों का रोज़ा फर्ज़ किया गया है, जो अरबी के रमज़ान के महीने में रखा जाता है।

ज़कात इबादत के साथ इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था का नाम हैं ज़कात साल में एक बार निकाली जाती है। इसको मालदारों से लेकर गरीबों ज़रूरतमन्दों के बीच में खर्च किया जाता है। जो लोग ज़कात निकालने की हद को पहुंच जाते हैं उनको ज़कात निकालने का हुक्म दिया गया है और न निकालने वालों को कड़ी सज़ा की चेतावनी दी गयी है।

इसी तरह जो लोग पैसे से खुश्हाल हैं उनको हज करने का हुक्म दिया गया है। हज भी इस्लाम के आधारों में से हे। हज अरबी महीने के जिलहिज्जा के महीने में अदा किया जाता है। जो लोग हज करने की ताक़त रखते हैं उनको हज करने की ताकीद की गयी है।

उपर्युक्त लाइनों में इस्लाम की जिन बुनियादों का उल्लेख किया गया है अगर देखा जाये तो इस्लाम के मानने वाले नियमित रूप से इन बुनियादों पर पूर्णरूप से अमल नहीं कर पा रहे हैं, नमाज़ की अदायगी में कोताही देखी जा रही है, रोज़े रखने में बड़ी तादाद पीछे है, इसी तरह से बहुत से मालदार हज़रात भी जक़ात की अदायगी में कोताही करते हैं, इसी तरह कितने ऐसे लोग हैं जो सामर्थ्य होने के बावजूद हज नहीं करते, इस्लाम की इन बुनियादों को उसी वक़्त मज़बूत बनाया जा सकता है जब हम लोग व्यवहारिक रूप से इस्लाम की शिक्षाओं का पालन करेंगे। कितने लोग रस्मों व रिवाज को बड़े शौक से अपनाते हैं और इस्लाम की असल तालीमात से गाफिल रहते हैं।

मासिक

इसलाहे समाज

सितंबर 2023 वर्ष 34 अंक 9

रबीउल अव्वल 1445 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑ वार्षिक राशि 100 रुपये

❑ प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. इस्लाम की बुनियाद 2
2. मानव-सम्मान 4
3. यह दुआ का वक़्त है 6
4. जुमुआ 09
5. इस्लाम धर्म में मंहगाई का समाधान 12
6. इस्लाम को समझने के लिए उदारता की ज़रूरत है 14
7. १४ वाँ आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स 17
8. दुआ अल्लाह की इबादत है 18
9. इन बातों का इस्लाम धर्म से कोई संबन्ध नहीं 20
10. प्रेस रिलीज़ 21
11. प्रेस रिलीज़ 22
12. ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स० की शिक्षाएं 24
12. अपील 27
13. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

सम्पादकीय

मानव-सम्मान

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन में फरमायाः

निःसन्देह हमने आदम की औलाद को बड़ी इज्ज़त दी और उन्हें खुश्की व तरी की सवारियां दीं और उन्हें पवित्र चीज़ों की रोजियां दीं और अपनी बहुत सी मख्लूक़ात (सृष्टि) पर उन्हें फज़ीलत दी'' (सूरे इसरा-७०)

कुरआन की एक दूरसी आयत में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ लोगो! हमने तुम सबको एक ही मर्द व औरत से पैदा किया है और इस लिये कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचानो तुम्हारे कुंबे और क़बीले बना दिये हैं, अल्लाह के नज़ीदक तुम में से बाइज्ज़त वह है जो सबसे ज़्यादा डरने वाला है'' (सूरे हुजुरात-१३)

मानव सम्मान के बारे में पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

किसी अरबी को किसी अजमी पर किसी अजमी को किसी अरबी पर, किसी गोरे को काले पर और काले को गोरे पर और किसी गोरे को काले पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं, है तो तक़्वा और परहेज़गारी के आधर पर, लोग आदम से हैं और आदम मिटटी से बनाये गये हैं '' (अददुरारूस्सनीआ)

इस्लाम ने जिस तरह तमाम इन्सानों को एक जान से पैदा होने की बात बता कर मानवीय समता, आपसी मेल जोल और भाईचारा का न अंत होने वाला पाठ दिया है वहीं इस एलान व बयान के जरिये इन्सान का सम्मान, सज्जनता, आदरणीय होने, हर तरह के भेद भाव और ऊंच नींच को खतम करने, उसकी इज्जत और मकाम व मर्तबा को उजागर और बुलन्द करने पर मुहर लगा दी। इन्सान के सम्मान, महानता पर इससे बड़ा बयान व एलान नहीं दिया जा सकता और न इस तरह की मिसाल पेश की जा सकती है।

इसी तरह हज्जतुल विदा के अवसर पर अल्लाह के रसूल ने मानव सम्मान और मानव अधिकार पर आधारित जो संबोधन दिया वह पूरी मानवता के लिये मार्गदर्शक है और तमाम इन्सानों को यह पैगाम देता है कि पूरी दुनिया की भलाई इसी में है कि हम इन्सान एक दूसरे की इज्जत व नामूस और अधिकार का ख्याल रखें और किसी का अपमान, अधिकार हनन और अत्याचार से बाज़ रहें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

जिस तरह तुम आज अर्थात हज के दिन का, हज के महीने का, पवित्र नगर (मक्का) का सम्मान करते हो उसी तरह से तुम्हारा खून और तुम्हारा माल भी तुम पर हराम है। अच्छी तरह से सुन लो कि

जाहिलियत की तमाम बुरी रस्मों को आज मैं अपने दोनों कदमों से कुचल रहा हूं। खास तौर से जाहिलियत के ज़माने के प्रतिशोध और खून का बदला लेने की रस्म को तो बिल्कुल मिटा रहा हूं, मैं सबसे पहले अपने भाई इब्ने रबीआ के खून के इन्तेकाम (प्रतिशोध) से अपदस्त होता हूं। जाहिलियत के ज़माने की सूदख़ोरी का तरीक़ा भी मिटा रहा हूं और सबसे पहले अपने चचा अब्बास बिन मुत्तलिब का सूद छोड़ता हूं। ऐ अल्लाह तू गवाह रहना, ऐ अल्लाह तू गवाह रहना, मैंने तेरा पैगाम तेरे बन्दों तक पहुंचा दिया। (अबू दाऊद)

इसी तरह अल्लाह के रसूल पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नारी अधिकार और कमजोरों की सुरक्षा और उनके मामलात में अल्लाह से डरने का आदेश दिया। नारी अधिकार के संबन्धा में आज पूरी दुनिया में चर्चा है और विभिन्न पहलुओं से औरतों के अधिकारों की सुरक्षा की बात हो रही है। पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा और अन्य अवसर पर औरतों के बारे में जो शिक्षाएं दी हैं अगर उन पर सहीह ढंग से अमल किया जाए तो औरतों की समस्याओं को भलीभांति हल किया जा सकता है। विकसित और पाश्चात्य दुनिया ने अब तक जितने घोषणा पत्र या चारटर जारी किये हैं और मानवीय एवं नारी अधिकार के जितने झण्डावाहक उठते रहे हैं वह सब इसका विकल्प पेश करने से विवश रहे और जो कुछ कागज़ी स्तर पर सही कीर्तिमान अंजाम दिये वह सब इसी का चर्बा है और रही इस पर व्यवहारिक आदर्श की बात तो इसको प्रस्तुत करने से अब तक दुनिया विवश है।

क़ौमों को अम्न व चैन, न्याय और समता के साथ रहने का उपदेश देते हुये पवित्र कुरआन ने फरमायाः

''किसी कौम की दुश्मनी तुम्हें न्याय के खिलाफ आमादा न कर दे, न्याय किया करो जो परहेज़गारी के ज़्यादा क़रीब है।'' (सूरे माइदा-८)

न्याय व समता के आधार पर क़ौमें, सरकारें और संगठन स्थापित रहते हैं और उनके नाम इतिहास के पन्नों पर उज्जवल रहते हैं और दुनिया उनको देर तक याद रखती है, उनकी नेकनामी के चर्चे अपने और पराये करते रहते हैं। इस्लाम का अम्न व शान्ति, न्याय का सन्देश इस अध्याय में सबसे उज्जवल रहा है कि जानी दुश्मन के साथ भी मामूली अन्याय भी उसे सहन नहीं रहा। इस्लाम के शासकों के न्याय की मिसाल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जैसी महान हस्ती भी देती है , जो स्वयं अहिंसा और न्याय स्थापित करने के लिये अबू बक्र और उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा को उदाहरण के तौर पर पेश किया करते थे और उनकी आरजू थी कि अपने आज़ाद भारत के लिये हम उनको आदर्श और आइडियल बनायें गे। फारस (ईरान) का बादशाह नौशेरवां एक गैर मुस्लिम शासक था लेकिन उसका प्रजा से लगाव और न्याय की वजह से उसे अच्छे शब्दों में याद किया जाता है। इस्लाम के शासकों और न्यायधीशों के फैसले न्याय व्यवस्था में मील के पत्थर की हैसियत रखते हैं।

यह दुआ का वक़्त है

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी

इस्लाम धर्म में दुआ का बड़ा ऊंचा और भव्य स्थान है। यह महान उपासना और महान आज्ञापालन है। यह इबादतों की आत्मा और उसका मग्ज़ है, यह अल्लाह की तरफ से तोहफा है। यह मोमिन का बचाव और सुरक्षा करती है यह कठिनाइयों और परेशानियों से निजात का अचूक उपाय है यह अल्लाह तआला की रहमतों और बर्कतों से अपनी झोली भरने और मकसद को पा लेने का बेहतरीन माध्यम है।

एक मोमिन को जब कोई परेशानी, कठिनाई और आपदा होती है तो वह तुरन्त दुआ का उपाय करते हुए अल्लाह के दरबार में अपने हाथ उठा लेता है और अपना अनुरोध उसकी अदालत में पेश करते हुए अपना दुखड़ा बयान करता है।

यह विनम्रता के साथ वह दुआ है जो बन्दा अपने रब से करता है वह किसी वक़्त भी माँगे उसका दरवाज़ा कभी बन्द नहीं होता। उससे मांगने के लिये कोई वक़्त निर्धारित नहीं हैं। उससे जितना मांगो उतना ही वह खुश होता है और न मांगो तो वह नाराज़ होता है, इसलिये जब कोई मुश्किल पेश आए, कठिनाई में लिप्त हों तो उससे मांगें खूब मांगें, जी भर कर दुआएं करें, डायरेक्ट मांगें। याद रखें संसार की पूरी सृष्टि उसकी मोहताज है और वह किसी का मोहताज नहीं। उससे इस यक़ीन के साथ मांगें कि वह हमारी सुन रहा है और ज़रूर कुबल करे गा उससे मांगें तो पूरी एकाग्रता के साथ मांगें उन औक़ात में मांगें जिन में अल्लाह की रहमत और ज़्यादा विस्तार हो जाती है। उसकी कृपा और मेहरबानियों के दरवाज़े और ज़्यादा खुल जाते हैं स्वयं भी मांगें और अपने मां बाप को राज़ी करके उनसे दुआ का अनुरोध करें क्योंकि मां बाप की दुआएं औलाद के हक़ में कुबूल होती हैं।

आधी रात के बाद और फर्ज़ नमाज़ों के बाद मांगें, अज़ान और एक़ामत के दर्मियान मांगें, सफर के दौरान मांगें।

इस हकीक़त को जेहन में बिठा लें कि दुआ न करना और अल्लाह से न मांगना घमण्ड की निशानी है। जो बदकिस्मत इन्सान यह इबादत नहीं करता वह घमण्डी है और अपने कर्म से ज़ाहिर करता है कि वह दुआ के मामले में अपने पालनहार से बेपरवाह है। उसे समझना चाहिए कि वह जिस जात और हस्ती से बेपरवाही का प्रदर्शन कर रहा है अगर वह किसी से बेपरवाह हो जाए तो फिर दुनिया में कोई भी उसकी परवाह नहीं करता और आखिरत में अल्लाह से बेपरवाही के नतीजे में नाकामियां उसका मुक़द्दर बन जाएंगी।

कुछ ऐसे भी हैं जो कठिनाइयों और परेशानियों में अपने सृष्टा और स्वामी को छोड़ कर मजबूर व बेबस सृष्टि के सामने रोते गिड़गिड़ाते हैं। मुर्दों के आस्तानों के दरवाज़े खटखटाते हैं कि शायद हमारी फरियाद व पुकार को सुनकर हमारी मदद करें और हमें इस विपदा और परेशानी से छुटकारा दें।

जबकि कुरआन और हदीस में मुश्किलात और विपदा के वक्त

घुटकारा व कामयाबी के लिये केवल अल्लाह से दुआएं करने का हुक्म दिया गया है उसी के सामने सर सजदे में रख कर सिस्कियाँ भरें, पुकारें, वह अल्लाह आपके आँसुओं को मोती समझ कर चुन लेगा और मुसीबतों के दलदल से निकाल कर कामयाबी की मंज़िल तक पहुंचा देगा। वही हमारी बिगाड़ी बनाने वाला, गरीबों को देने वाला, संकट मोचक और ज़रूरत पूरी करने वाला है।

दुआ से संबन्धित इस आवश्यक भूमिका के बाप आइये देखें कि दुआ की क्या अहमियत है, कुरआन और हदीस में इसकी फज़ीलत, दुआ मांगने की प्ररेणा और उसके महा पुण्य किस अन्दाज़ से बयान किये गये हैं।

१. उसकी महानता एवं महत्ता के लिये यही काफी है कि अल्लाह तआला अपनी किताब पवित्र कुरआन को दुआ ही से शुरू किया है और दुआ ही पर खतम किया है जैसे कि पहली सूरत अलहम्दो यह सूरत एक महान उददेश्य की प्राप्ति की दुआ पर आधारित है और वह महान उददेश्य अल्लाह से सीधी एवं सत्य राह की तरफ मार्ग दर्शन का सवाल है ''इह दिनस सिरातल मुसतकीम'' अर्थात ''हमें सीधी राह पर चला'' सूरे फातिहा आयतः ६

इसी तरह कुरआन की अंतिम सूरत सूरतुन नास'' भी दुआ ही है। किस चीज़ की दुआ? बन्दा अल्लाह से यह दुआ मांगता है कि मैं खन्नास शैतान के बुरे वस्वसे से तेरी शरण मांगता हूं जो इन्सानों के दिलों में वस्वसे पैदा करता है ''मिन शर रिल वस्वासिल खन्नास अल्लजी युवस विसू फी सुदूरिन नास'' (सूरे नास, ५-४) अर्थात वस्वसा पैदा करने वाले छिप जाने वाले शैतान के शर से, जो लोगों के सीनों में वस्वसे पैदा करता है।

२. पवित्र कुरआन में दुआ को इबादत और दीन से उल्लिखित किया गया है जैसा कि इस आयत से इसकी पुष्टि होती है।

''और तुम्हारे रब ने कह दिया है, तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआएं कुबूल करूंगा बेशक जो लोग घमण्ड की वजह से मेरी इबादत नहीं करते वह जल्द ही अपमान व रूस्वाई के नरक में दाखिल होंगे।'' (सूरे गाफिर-६०)

और जैसा कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फरमायाः

''लोगो मैं तुम सब से जुदा होता हूं और उन पूज्यों से भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो और मैं अपने रब को पुकारूं गा, मुझे उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार कर (उसकी रहमत) से वंचित नहीं रहूंगा'' (सूरे मरयम-४८)

इसी तरह दुआ को दीन कहे जाने की स्पष्ट दलील कुरआन की यह आयत है ''पस तुम लोग बन्दगी व दुआ को उसके लिये खालिस करके पुकारो'' (सूरे गाफिर-६५)

३. तमाम इबादतें दुआवों पर आधारित हैं मिसाल के तौर परः

नमाज, जिस का अर्थ दुआ ही है। शुरू से लेकर आखिर तक दुआ दी है। रोज़ा, जिसके बारे में मश्हूर हदीस है कि जब जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने यह दुआ की कि ''ऐसा शख्स जिसने रमज़ान को पाया और (अपने तौबा व इस्तेग़फार, दुआ व अज़कार के द्वारा) अपने गुनाहों को नहीं मआफ करवाया तो वह हलाक व बरबाद हो गया'' (तिर्मिज़ी-३५०५) इस दुआ पर हमारे नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने आमीन कही।

इस मुबारक महीने के आखिरी दस दिनों की ताक़ रातों में अल्लाह से दुआ मांगने के लिये हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक संक्षिप्त और व्यापक दुआ सिखाई है। ''ऐ अल्लाह तू बहुत मआफ करने वाला है, मआफी को पसन्द

करता है इसलिये मुझे मआफ कर दे'' (तिर्मिज़ी-३५१३)

जो लोग हज कर चुके हैं वह जानते हैं कि हज के लिये रवानगी से लेकर वापसी तक हाजी लगातार दुआ और अज़कार ही में व्यस्त रहता है।

४. अल्लाह तआला ने अपने बन्दे को दुआ पर उभारा है और इसे कुबूल करने का वादा किया है। यही वजह है कि तमाम पैगम्बर अलैहिमुस्सलाम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम ज़िन्दगी में पेश आने वाले तमाम हालात में अल्लाह से दुआएं माँगा करते थे और उनकी दुआएं कुरआन में मौजूद और सुरक्षित हैं। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया तुम लोग अपने रब को अत्यंत आजिजी व इनकिसारी (विनम्रता) और खामूशी के साथ पुकारो, बेशक वह हद से तजाउज़ (सीमा का उल्लंघन) करने वाले को पसन्द नहीं करता है'' (सूरे आराफ-५५)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''और अल्लाह को भय और उम्मीद के साथ पुकारा करो, बेशक अल्लाह की रहमत नेकी करने वालों के क़रीब होती है'' (सूरे आराफ-५६)

इसी तरह अंबिया किराम अलैहुमुस्सलाम की तारीफ करते हुये अल्लाह तआला ने फरमायाः

''बेशक वह लोग भलाई के कामों की तरफ सबक़त करते थे और हमें उम्मीद व बीम (आशा) की हालत में पुकारते थे और हमारे लिये खुशूअ व खुजूअ एख्तियार करते थे'' (सूरे अंबिया-९०)

और सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम की रातें कैसे बसर होती थीं, अर्श वाल (अल्लाह) ने गवाही दी है। ''रात में उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं, अपने रब को उसके अज़ाब के डर से और उसकी जन्नत की लालच में पुकारते हैं और हमने उन्हें जो रोज़ी दी है, उसमें से खर्च करते हैं'' (सूरे सज़ा-१६)

गौर करें किस तरह अल्लाह अपने बन्दों को बड़े ही प्यारे अन्दाज़ में मग्फ़िरत (क्षमायाचना) की दुआ मांगने की तरफ बुला रहा है। हदीस कुदसी में है। ''ऐ मेरे बन्दे! बेशक तुम लोग रात व दिन गुनाह करते रहते हो और मैं तुम्हारे गुनाहों को मआफ कर देता हूं, इसलिये तुम लोग मुझ से माफी मांगो, मैं तुम्हारे गुनाहों को मआफ कर दूंगा।'' (सहीह मुस्लिमः२५७७)

५. दुआ के लिये कोई दिन, जगह या वक़्त खास नहीं है यह ऐसा अमल है जिसे हर वक़्त और हर क्षण करने की इज़ाज़त है जैसा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी के अध्ययन से मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी का कोई क्षण दुआ से खाली नहीं। सोते, वक़्त जागते वक़्त, खाने से पहने और बाद में, बाज़ार में दाखिल होते वक़्त सुबह शाम, चांद पर नज़र पड़ी, छींक आई, नया कपड़ा पहना। सम्माननीय पाठको! यह कोरोना का जो प्रकोप है अल्लाह का अज़ाब है। मानवीय इतिहास का भयावह हादसा है। इस वैश्विक महामारी से छुटकारा पाने और इसका असल और शाश्वत एलाज यह है कि अल्लाह के बन्दे खड़े हों, अल्लाह की तरफ रूजू हों, गुनाहों से दूरी बनाएं, खालिस तौबा करें और सच्चे दिल से विनम्रता के साथ दुआ करें याद रखें यह दुआ का वक्त है,

न जाने कोई आशूब तुम को आ घेरे

अजीब वक़्त है दस्ते दुआ दराज़ करो

जुमुआ

डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

शुक्रवार को अरबी भाषा में जुमुआ कहते हैं। इस्लाम से पहले इसको 'अरुबा' कहते थे। जुमुआ इस्लामी नाम है, जो सप्ताह का छठा दिन होता है। पहला दिन रविवार है। इसी दिन से अल्लाह तआला ने इस संसार की रचना का आरम्भ किया और छह दिनों में शुक्रवार को समाप्त किया और फिर सिंहासन पर विराजमान हो गया। कुरआन में है:

''वास्तव में तुम्हारा रब तो अल्लाह ही है जिसने आकाशों और धरती को छह दिनों में पैदा किया, और फिर अर्श (सिंहासन) पर विराजमान हो गया।'' (सूरा-७, अल-आराफ़, आयत-५४)

सहीह हदीसों से पता चलता है कि शुक्रवार ही को अल्लाह ने आदम को पैदा किया। इसी दिन उनको स्वर्ग में प्रविष्ट किया। इसी दिन उनको स्वर्ग से बाहर निकाला। इसी दिन प्रलय आएगी, इस दिन एक ऐसी भी घड़ी है, जिसमें अल्लाह तआला अपने बन्दों की दुआओं को विशेष तौर पर स्वीकार करता है।

अर्थात शुक्रवार की बड़ी विशेषताएं और महिमाएं हैं। इस्लाम से पहले जो लोग इबराहीम के अनुयायी थे वे भी इस दिन की विशेषताओं और महिमाओं को मानते थे, जिसमें स्वयं मूसा अलैहिस्सलाम भी थे। परन्तु बाद में यहूदियों ने जब अल्लाह को एक मनुष्य का रूप दे दिया, जिसको वे 'यहोवा' कहते हैं, तो उन्होंने शुक्रवार को छोड़कर शनिवार को ग्रहण कर लिया, और यह कहने लगे कि चूंकि अल्लाह ने छह दिनों में संसार को पैदा किया और सातवें दिन विश्राम किया, इसलिए हम भी सातवें दिन विश्राम करेंगे। और फिर इसके लिए उन्होंने अपने नबियों और दूसरे लोगों के बहुत सारे वचन बाइबल में प्रविष्ट कर लिए। फिर ऐसा हुआ कि शनिवार को अल्लाह ने उनके लिए अनिवार्य कर दिया और उसके विपरीत काम करने पर उनको कठोर दंड दिया। कुरआन इसी ओर संकेत करते हुए कहता है।

''रहा शनिवार का दिन तो यह उन लोगों पर आच्छादित कर दिया गया जिन्होंने उसके विषय में विभेद किया। और निस्सन्देह तेरा रब क़ियामत के दिन उसमें मतभेद करने वालों के बीच फैसला कर देगा।'' (सूरा १६, अन-नहल आयत १२४)

अर्थात् उन लोगों पर प्रकट कर देगा कि वास्तव में इबराहीम अलैहिस्सलाम के धर्मशास्त्र में तो शुक्रवार की विशिष्टता थी परन्तु तुम लोगों ने स्वयं शनिवार को अपना लिया और फिर स्वयं अपने बनाए हुए विधान का ही अपमान और उल्लंघन किया, जिसके कारण कठोर दंड के भागी बने।

''हम क़ियामत के दिन सबसे आगे होंगे, जबकि उन लोगों को हमसे पहले धर्मशास्त्र दिया गया था, और यही शुक्रवार का दिन था जो उन पर अनिवार्य किया गया था,

लेकिन वे उसमें मतभेद कर बैठे। बस अल्लाह ने हमारी हिदायत की, इसलिए लोग हमारे अधीन हैं। यहूदी एक दिन बाद (अर्थात शनिवार को) और ईसाई उनके एक दिन बाद (अर्थात रविवार) (सहीह बुखारी, ८७६ तथा सहीह मुस्लिम ८५५)

यहूदियों ने शनिवार को अपने लिए पवित्र दिन ठहराया। इस दिन वे कोई काम नहीं करते थे। उनके धार्मिक विद्वान केवल धर्मशास्त्रों का अध्ययन करते थे। जब ईसा अलैहिस्सलाम आए और उन्होंने यहूदियों की दशा देखी तो उनकी कड़ी आलोचना की और कहा-

''सब्त का दिन (शनिवार) मनुष्य के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए। इसलिए मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।'' (बाइबल, मरकुस, २ः २७)

यहूदी ईसा अलैहिस्सलाम से एक बार इसलिए क्रोधित हो उठे, क्योंकि उन्होंने शनिवार को एक सूखे हाथवाले मनुष्य के हाथ को ठीक कर दिया। (बाइबल, मरकुस, ३ः३-६)

प्रारम्भिक काल में कुछ ईसाइयों ने शनिवार को पवित्र माना, लेकिन फिर वे शनिवार को छोड़कर रविवार को पवित्र मानने लगे, क्योंकि उनके विचार में रविवार को मसीह अलैहिस्लाम कब्र से बाहर निकले थे। सन ३६४ ईसवी में मसीही धर्म सम्मेलन ने सदैव के लिए शनिवार के स्थान पर रविवार को निर्धारित कर दिया। इस प्रकार ये दोनों जातियां- यहूदी तथा ईसाई उस पवित्र दिवस को नहीं पा सके, जिसे जुमुआ कहते हैं। इस पवित्र दिन जुमुआ की ओर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मार्गदर्शन किया।

जुमे का अर्थ है इकटठा होना। इस्लाम में इसकी इतनी अधिक विशिष्टता और महिमा है कि अल्लाह तआला ने इस नाम की सूरा उतारी, जिसको 'सूरतुल-जुमा' कहा जाता है। इस सूरा की नवीं आयत है।

''ऐ ईमान वालो! जब जुमा के दिन तुम्हें नमाज़ के लिए बुलाया जाए तो तुम अल्लाह को याद करने के लिए दौड़ पड़ो और क्रय-विक्रय छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है यदि तुम ज्ञान रखते हो।'' (कुरआन, सूरा-६२, अल-जुमआ, आयत-९)

यहाँ अल्लाह तआला की याद का तात्पर्य है जुमा की नमाज़, जिसे पढ़ना प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य ठहराया गया है। सहीह हदीसों में इसे पढ़ने की बड़ी ताकीद आई है। एक सहीह हदीस में आया है।

''लोग जुमे की नमाज़ छोड़ने से रूक जाएं, नहीं तो अल्लाह उनके दिलों पर ठप्पा लगा देगा। फिर वे ग़ाफ़िलों में से हो जाएंगे'' (सहीह मुस्लिम ८६५)

इसी प्रकार एक दूसरी हदीस में आया हैः

''जो मुसलमान तीन जुमे अपनी सुस्ती के कारण छोड़ेगा, अल्लाह तआला उसके हृदय पर ठप्पा लगा देगा'' (देखिएः इब्ने-माजा ११२६, इब्ने खुज़ैमा १८५६ तथा मुसनद अहमद १५५९)

हां, मुसाफिर (यात्री), महिला, छोटे बच्चे और रोगी पर जुमे की नमाज़ फर्ज़ नहीं है।

जुमे के कुछ विशेष आदाबः

१. जुमे के दिन हर मुसलमान को स्नान अवश्य करना चाहिए।

२. अच्छे वस्त्र पहनना और सुगंध लगाना सुन्नत है।

३. जल्द-से जल्द मस्जिद पहुंचने का प्रयास करना चाहिए।

४. मस्जिद में प्रवेश करते समय इसका ध्यान रखना चाहिए कि किसी दूसरे व्यक्ति को कष्ट न हो। इसलिए किसी को फलांग कर आगे जाना मना है, बल्कि जहां स्थान मिले, वहीं बैठ जाना चाहिए।

५. अगर कोई व्यक्ति किसी कारण मस्जिद से बाहर जाता है, तो उसके स्थान को खाली रखना चाहिए, क्योंकि वह उस स्थान का अधिक अधिकारी है।

६. यदि दो व्यक्तियों के बीच में कुछ स्थान है, और कोई तीसरा व्यक्ति वहां बैठना चाहता है तो चाहिए कि इधर-उधर सरक जाएं, ताकि उसके लिए स्थान बन जाए।

७. बैठने से पूर्व दो रकअत नमाज़ पढ़ना सुन्नत है, जिसको तहियतुल मस्जिद अर्थात मस्जिद का प्रणाम कहते हैं।

८. जब इमाम खुतबा (भाषण) दे रहा हो, तो उसके भाषण को ध्यानपूर्वक सुनना अनिवार्य है। भाषण के बीच किसी से बातें करना या अपने आपको किसी और काम में लगाना मना है।

९. जुमे के दिन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अधिक से अधिक दुरुद व सलाम भेजना चाहिए।

१०. इमाम को चाहिए कि अपना भाषण बहुत लम्बा न करे, बल्कि जो कुछ कहना है संक्षेप में बयान करे।

११. जब इमाम भाषण देने के लिए खड़ा हो जाए और अज़ान दी जाने लगे, उस समय किसी भी प्रकार का काम करना निषिद्ध हो जाता है। इसलिए ऐसे समय में कोई चीज़ बेचना या खरीदना वर्जित है।

१२. जुमे की नमाज़ के पश्चात नियमानुसार काम, व्यापार वगैरह किया जाए।

जुमा वास्तव में मुसलमानों का साप्ताहिक त्योहार है। इसलिए इस दिन अच्छे वस्त्र पहनना, स्नान करना, अच्छा खाना खाना, एक दूसरे से मिलना जुलना, बच्चों को घुमाना फिराना ये सब उचित काम है। परन्तु इस्लामी शिक्षाओं के विरुद्ध कोई काम करना उचित नहीं। जैसे सिनेमा देखना, मुस्लिम स्त्रियों का बनाव सिंगार करके बाहर निकलना इत्यादि।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

इस्लाम धर्म में मंहगाई का समाधान

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

मंहगाई एक ऐसी समस्या है जिससे व्यक्ति और समाज परेशान है, मंहगाई के विभिन्न कारण होते हैं मालदार बनने की चाहत और लालच भी मंहगाई का एक अहम कारण है इसी लिये इस्लाम ने दौलतमन्दी और मालदारी की लालच से मना किया है क्योंकि यह समाज में बिगाड़ का कारण बनता है। निम्न पंक्तियों में मंहगाई का शरई समाधान पेश किया जा रहा है।

१. परहेज़गारी करने से माल में बरकत होती है जैसा कि अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन में फरमायाः

''और अगर इन बस्तियों के रहने वाले ईमान ले आते और परहेजागरी अपनाते तो हम इन पर आस्मान और ज़मीन की बरकतें खोल देते लेकिन उन्होंने झुठलाया तो हमने उनके आमाल की वजह से उनको पकड़ लिया।'' (सूरे आराफ-८६)

पवित्र कुरआन में दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमायाः

''और अगर यह अहले किताब ईमान लाते और ईश्परायणता (तक़्वा) अपनाते तो हम उनकी तमाम बुराइयों को मआफ कर देते और अवश्य उन्हें राहत व आराम की जन्नतों में ले जाते और अगर यह लोग तौरात और इंजील और उनकी जानिब जो कुछ अल्लाह तआला की तरफ से नाज़िल किया गया है उनके पूरे पाबन्द रहते तो यह लोग अपने ऊपर से और नीचे से रोज़ियां पाते और खाते। एक जमाअत तो उन में से दरमियाना रविश की है बाक़ी उनमें से बहुत से लोगों के बुरे आमाल हैं।''

तक़्वा से रोज़गार में बढ़ोतरी होती हे जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''और जो शख्स अल्लाह से डरता है अल्लाह तआला उसके लिये छुटकारे की शकल निकाल देता है और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देता है जिसका उसे गुमान भी न हो'' (सूरे तलाक़-२)

२. ज़्यादा से ज़्यादा दुआ और क्षमायाचना जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''और मैंने कहा कि अपने रब से अपने पाप मआफ करवाओ (और माफी मांगो) वह निस्न्देह बड़ा बख्शने वाला है। वह तुम पर आस्मान को खूब बरसता हुआ छोड़ देगा और तुम्हें खूब निरन्तर माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हें बागात देगा और तुम्हारे लिये नहरें निकाल देगा'' (सूरे नूहः १०,१२)

इब्ने सबीह रह० कहते हैं कि एक शख्स ने हसन बसरी रह० से अकाल के बारे में शिकायत की तो उन्होंने फरमायाः अल्लाह तआला से अपने पापों की मआफी मांगो। दूसरे ने भुखमरी की शिकायत की तो उससे भी कहा कि अल्लाह से मआफी मांगो एक और व्यक्ति ने कहा मेरे लिये अल्लाह से औलाद की दुआ कीजिए तो उससे भी इन्होंने अल्लाह से क्षमायाचना (मआफी

मांगने) के लिये कहा। इब्ने सबीह कहते हैं कि हमने उनसे पूछा कि आप ने तीनों सवालों का एक ही जवाब दिया तो उन्होंने फरमाया कि मैंने अपनी तरफ से कुछ नहीं कहा बल्कि सूरे नूह में अल्लाह तआला का ही फरमान हैः

''और मैंने कहा कि अपने रब से अपने पाप मआफ करवाओ (और माफी मांगो) वह निस्न्देह बड़ा बख्शने वाला है। वह तुम पर आस्मान को खूब बरसता हुआ छोड़ देगा और तुम्हें खूब निरन्तर माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हें बागात देगा और तुम्हारे लिये नहरें निकाल देगा'' (सूरे नूहः १०,१२)

३. समाजी एकता सौहार्द और ज़कात व सदक़ात की अदायगी से गरीबों और ज़रूरमंदों की मदद होती है। अगर इन गरीबों व फ़कीरों के अन्दर काम करने की ताक़त है तो काम की शुरूआत करने के लिए जक़ात से उनकी मदद होती है और अगर काम करने की ताक़त नहीं है तो उनकी आर्थिक सहायता की जाती है। ज़कात से समाज मोहताजी से छुटकारा पाता है और देश को आर्थिक शक्ति मिलती है जबकि ज़कात की आदायगी से बरकत होती और समाज में आपसी मोहब्बत का माहौल पैदा होता है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसके पास फालतू सवारी हो तो वह इसे उस शख्स को दे दे जिसके पास सवारी नहीं है और जिसके पास फालतू सफर खर्च हो तो वह उसे दे दे जिसके पास सफर खर्च न हो। (सहीहुल जामे)

४. अल्लाह के फैसले पर खुश रहना और संतोष करनाः अल्लाह के रसूल स० ने फरमायाः अल्लाह तआला की तरफ विभाजित रोजी पर खुश रहो सब लोगों से ज़्यादा खुश्हाल रहोगो। (तिर्मिज़ी)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि उन्होंने उर्वा बिन जुबैर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से कहाः अल्लाह की क़सम ऐ मेरे भांजे! हम एक दफा पहली का चांद देखते फिर (अगले महीने) पहली का चांद का देखते, दो महीनों में तीन दफा भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घरों में चूल्हा न जला होता। उर्वा ने कहा खाला तो आप की गुज़रान के लिये कौन सी चीज़ होती? फरमायाः दो काली चीज़ें, खुजूर और पानी (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम)

५. मध्यमार्ग के आदी बनो, ऐश व आराम और फालतू खर्च से बचो। समाज में बेतहाशा ऐश व आराम का मतलब है कि विभिन्न खानों, पकवानों की बहुतात हो। बाज डाक्टरों ने कहा है कि अल्लाह तआला ने आधी मेडिकल को कुरआन की इस आयत में जमा कर दिया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः ''और खूब खाओ और पियो और हद से न निकलो। बेशक अल्लाह तआल हद से निकल जाने वालों को पसन्द नहीं करता।'' (सूरे आराफ-३१)

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया खाओ, पियो, पहनो, सदक़ा खैरात करो, और फालतू खर्च और घमंड से दूर रहो। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं जो चाहो खाओ और पहनो लेकिन इसके अन्दर दो बातें न हों एक फालतू खर्च और दूसरा घमण्ड (नेसई)

इस्लाम को समझने के लिए वैचारिक और मानसिक उदारता की ज़रूरत है

डा० मुक़्तदा हसन अज़हरी

सियासी मामलात में इस्लाम ने किसी ख़ास प्रकार की व्यवस्था की वकालत नहीं की है उसकी नज़र में यह विभाग मानव-सेवा का एक विस्तारित मैदान है जो लोग सियासत (राजनीति) में उतरें उनका फर्ज़ है कि वह प्रजा की सेवा को अपने हितों पर प्राथमिकता दें इसी लिये इस्लाम ने पद चाहने वालों को पद देने से मना किया है। वह कहता है कि मश्वरा से ऐसे शख्स को पद देना चाहिए जो इस के लिये सक्षम और योग्य हो और उसके दिल में अल्लाह का भय हो। इस्लाम पद की प्राप्ति का समर्थक नहीं है।

आर्थिक व्यवस्था के बारे में इस्लाम की शिक्षा यह है कि क्रय-विक्रय और लेन देन के तमाम मामलात का सूद, धोका, ख्यानत और शोषण वगैरा खराबियों से पवित्र होना ज़रूरी है।

इस्लाम भीक मांगने का भी सख्त विरोधी है इसी लिये उसने व्यवपार, दस्तकारी और मेहनत व मजदूरी के तमाम कामों का प्रोत्साहन किया है और सिर्फ उन सूरतों से मना किया है जिस में किसी हराम काम का पहलू हो।

इस्लाम की न्यायिक व्यवस्था भी दूसरी व्यवस्थाओं की तरह बेहद ठोस और व्यापक है। इस्लाम ने जज के पद को बहुत नाज़ुक और महत्वपूर्ण क़रार दिया है और काफ़िरों (जजों) को सख्ती से आदेश दिया है कि वह किसी भी हाल में इन्साफ के सिद्धांतों का उल्लंघन न होने दें। कुरआन में इस बात पर बहुत बल दिया गया है कि फैसले में इन्साफ की पाबन्दी ज़रूरी है। मामला चाहे अपने आदमी का हो या किसी अंजान का। इसी तरह न्यायिक मामले में गवाही को अहमियत दी गयी है झूठी गवाही पर सख्त सज़ा की चेतावनी है और इसे महा पाप बताया गया है। मुक़दमात में मामलात को गलत दिशा देने के लिये रिश्वत के लेन देन पर भी जहन्नम की चेतावनी दी गई है। जजों को उनकी जिम्मेदारी की बारीकी का एहसास दिलाने के साथ ही इस्लाम ने दोनों पक्षों को भी आदेश दिया है कि अदालत के गलत फैसले से अगर कोई हक़ उन्हें मिल जाए गा तो वह परलय के दिन अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकेंगे। स्वयं पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी अपने फैसले के संबन्ध में यह स्पष्टीकरण दिया कि मेरे फैसले के सहारे गैर पात्र शख्स अगर कोई चीज़ ले लेगा तो यह उसके लिये जहन्नम की आग बन जाएगी। सहीह हदीस में है कि आप के इस प्रवचन को सुन कर मुक़दमा पेश करने वाले दोनों पक्षकार रोने लगे और अपनी अपनी मांगों से हट गये। इस्लाम के सबसे बड़े जज स्वयं पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे आप के सामने जब कुरैश कबीले की एक औरत के चोरी करने का मामला पेश हुआ तो बाज लोगों ने कबीले की प्रतिष्ठा का लिहाज करते हुए चाहा कि इसे मआफ कर

दिया जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिफारिश (अनुशंसा) सुन कर गुस्सा हो गये और मामले की अहमियत का एहसास दिलाते हुए फरमाया कि अगर मेरी लड़की के खिलाफ भी चोरी का जुर्म साबित हो जाए तो मुझे उसका हाथ काटने में कोई संकोच और असमंजस नहीं होगा। इतिहास ने हर काल में इस्लाम की व्यवस्था की बरकत को देखा है और आज भी अगर इस व्यवस्था की पाबन्दी की जाए तो मानव समाज अपनी बहुत से उलझनों से छुटकारा पा सकता है।

जो लोग इस्लाम पर आपत्ति का जेहन बना लेते हैं उनकी निगाहें केवल उनही मामले पर ठेहरती हैं जिन से इस्लाम के खिलाफ कुछ कहने की कुछ गुंजाइश हो वर्ना पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जमाने से आज तक के मुस्लिम शासन के इतिहास पर नज़र डालिए तो आप को अनगिनत ऐसे वाक़आत नज़र आएं गे जिन से इस्लाम के न्याय, प्रजा पालन और उदारता साबित हो गी। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का के मुश्रिकीन ने १३ साल तक जिस तरह दुख पहुँचाया था और आप के साथ दुष्टता की थी इससे इतिहास का हर विद्यार्थी परिचित है। उनके दुख पहुंचाने के कारण पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का छोड़ कर मदीना चले गये थे लेकिन आठ साल बाद जब आप ने मक्का पर विजय पा लिया और बड़े बड़े मुजरिमीन आप के सामने पेश किए गये तो आपने उन सब को मआफ कर दिया जब कि उन में से हर एक अपने पूर्व व्यवहार की वजह से यह विश्वास किये हुए था कि आज छुटकारा पाना कठिन है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाओ तआला अन्हो के इन्साफ और आप की सियासत व शासन शैली की पूरी तारीख में मिसाल दी जाती है। बैतुल मकदिस के सफर में हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने ईसाइयों के गिरजे से बाहर नमाज़ अदा की और फरमाया कि अगर मैं अन्दर नमाज़ पढ़ लेता तो संभव है कि कल कोई मुसलमान यह दावा करता कि अमीरूल मोमिनीन ने यहां नमाज़ अदा की थी इस लिये हम इसे मस्जिद बनाएंगे।

इसी तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने मदीने में एक बूढ़े शख्स को भीख मांगते हुए देखा पूछने पर मालूम हुआ कि यहूदी है। पूछा कि भीख (भिक्षा) मांगने की वजह कया है? उसने जवाब दिया कि घर का खर्च चलाना है और जिज़या अदा करना है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो उसका हाथ पकड़ कर अपने घर ले गये और जो कुछ मौजूद था उसे दे दिया फिर बैतुल माल के खाज़िन (कोषाध यक्ष) को लिखा कि इसके लिये और इस तरह के दूसरे मजबूरों के लिये बैतुल माल (सरकारी खज़ाने) से वज़ीफ़ा तय कर दो यह न्याय की बात नहीं है कि जवानी में हम इससे जिजया की रक़म लें और बुढ़ापे में इसे दरबदर की ठोकर खाने के लिये छोड़ दें।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मिस्र के गवर्नर थे उनके लड़के महुम्मद का एक किबती मिसरी से घुड़दौड़ के मसले पर झगड़ा हो गया गवर्नर के बेटे मुहम्मद ने किबती को कोड़े से मार दिया। किबती ने कहा कि मैं अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से शिकायत करूंगा। गर्वनर के बेटे मुहम्मद ने जवाब दिया कि तुम्हारी शिकायत का मुझे कोई डर नहीं है मैं प्रतिष्ठित मां बाप का बेटा हूं यह सुन कर किबती मुकदमे के लिये मदीना पहुंचा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से घटना का विवरण बताया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने मिस्र से बाप बेटे को बुलवाया और बयान लेने के बाद फैसला सुनाते हुए किबती को कोड़ा दिया और फरमाया कि प्रतिष्ठित बाप के बेटे को उसी तरह मारो जिस तरह उसने तुम को मारा था। फिर हज़रत अम्र बिन आस को संबोधित करते हुए फरमाया कि मां के पेट से आज़ाद पैदा होने वालों को तुमने किस दलील के आधार पर गुलाम मान लिया है?

इस्लामी इतिहास में अगर इस प्रकार की घटनाएं घटित हो चुकी हैं तो फिर इन का संदर्भ क्यों नहीं दिया जाता और उनसे शासन का जो उच्च आदर्श स्थापित हुआ इस का सेहरा मुसलमानों के सर क्यों नहीं बाँधा जाता? क्या मुसलमानों पर सख्ती और तंगनजरी (संकीर्णता) का आरोप लगाने वाले ऐसा करते हुए स्वयं तंग नजरी का शिकार नहीं हो जाते?

अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन की एक लम्बी सूरत को औरतों के नाम उल्लिखित किया है और इस सूरह की पहली आयत में इस हक़ीक़त का इज़हार किया है कि मर्द और औरत दोनों की पैदाइश एक जान अर्थात आदम अलैहिस्सलाम से हुई है। पैदाइश में बराबरी के इस एलान के बाद कुरआन ने स्पष्ट किया है कि मर्द और औरत में से जो भी अच्छा कर्म करेगा उसे इसका पूरा पूरा पुण्य मिलेगा। धार्मिक मामलात में समता के बाद फरमाया कि औरतों के साथ अच्छा व्यवहार करो क्रय विक्रय में इस्लाम में नारी के अधिकार को स्वीकार किया है और पति के साथ रहते हुए उसे माल के स्वामित्व और इसमें से खर्च करने का अधिकार दिया है ज्ञान सीखने और सिखाने की भी नारी को इजाज़त दी है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में आप की बीवियों ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जिस तरह ज्ञान सीखा और सहाबा को सिखाया इसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिल सकता। अरब समाज में औरतों की इस हद तक नाकदरी थी कि लड़कियों को ज़िन्दा दफन कर दिया जाता था और लड़की की पैदाइश पर घर में निराशा पैदा हो जाती थी। लेकिन इस्लाम ने लड़की की पैदाइश को भलाई और बर्कत करार दिया और ज़िन्दा दफन करने की रस्म को बिल्कुल खतम कर दिया।

इस्लाम के बारे में जिन यथार्थ को मैंने पेश किया है वह सिर्फ उदाहरण हैं अगर विस्तार से देखें तो इस्लाम के हर आदेश में आप को मानवता के सम्मान और कल्याण का पहलू नज़र आएगा और ऐसा इस लिये है कि यह व्यवस्था किसी इन्सान के दिमाग का नहीं बल्कि उस अल्लाह की उतारी हुई है जिसने इन्सान को और इस पूरे संसार को पैदा किया है जिस में हम अपनी आशाओं और हौसलों की पूर्ति कर रहे हैं। इस लिये इस्लामी शिक्षाओं को पढ़ कर कोई राय स्थापित करें।

(जरीदा तर्जुमान २४/२/१९९५, लेख का आंशिक भाग)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम

14 वाँ आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स

पिछले वर्षों की तरह मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा प्रचारकों, अध्यापकों और अइम्मा का आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स 17 सितंबर से 24 सितंबर 2023 तक आयोजित होगा।

उम्मीद है कि यह रेफ्रेशर कोर्स भी पिछले वर्षों की तरह लाभप्रद होगा। जमाअत के सुप्रसिद्ध इस्लामी स्कालर्स, शोधकर्ता, कानून के माहिरीन अपने इलमी, और दावती अनुभव से लाभान्वित करेंगे। राज्यों के अमीरों और सचिवगण से अपील है कि वह अपने प्रतिनिधियों के नाम जल्द से जल्द भेज दें। हर राज्य से दो प्रतिनिधियों के नाम भेजें।

नोटः- रेफ्रेशर कोर्स का उदघाटन सत्र 17 सितंबर 2023 इतवार को सुबह दस बजे आयोजित होगा जिसमें तमाम भाग लेने वालों की शिर्कत ज़रूरी है।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

दुआ अल्लाह की इबादत है

दुआ करना वास्तव में अल्लाह की बंदगी करना है, क्योंकि दुआ के द्वारा बन्दा अपने आपको अल्लाह के सामने बड़े निर्बल रूप में पेश करता है। और इस बात का दिल में विश्वास रखता है कि देने वाला केवल अल्लाह है। इसलिए उसी से मांगना चाहिए। अल्लाह ने कुरआन में स्वंय हुक्म दिया है कि मुझसे ही मांगो, मैं ही दूंगा।

''तुम्हारे रब ने कहा, मुझसे ही मांगो, मैं ही तुम्हारी दुआ स्वीकार करूंगा।'' निसन्देह जो लोग मेरी बन्दगी के मामले में घमण्ड से काम लेते हैं, वे शीघ्र ही अपमानित होकर नरक में पहुंच जाएंगे।'' (सूरा-४०, अल मोमिन, आयत-६०)

''अपने रब को गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके पुकारो। निस्सन्देह वह हद से आगे बढ़ने वालों से प्रेम नहीं करता।'' (सूरा-७, अल-आराफ़, आयत-५५)

अर्थात दुआ करना वास्तव में अल्लाह की बंदगी करना है, जैसा कि हदीस में आया है।

दुआ बंदगी ही है। (अबू दाऊद, १४७६, तिरमिज़ी, २६६६, इब्ने-माजा, ३८२८ तथा मुस्नद अहमद ८-२६७)

प्रत्येक मुसलमान पर अनिवार्य है कि वह अल्लाह से दुआ करता रहे, क्योंकि दुआ से भाग्य बदल सकता है जैसा कि एक हदीस में आया है-

''भाग्य को दुआ के अतिरिक्त कोई और चीज़ नहीं बदल सकती'' (मुस्तदरक १:४६३)

परन्तु लिखा हुआ भाग्य तो मिट नहीं कसता, इसलिए इस हदीस का अर्थ यह है कि वही दुआ स्वीकार की जाएगी जो भाग्य के समर्थन में हो, उससे टकराती न हो, चूंकि हमें भाग्य का ज्ञान नहीं, इसलिए दुआ करनी चाहिए कि भाग्य से टकराए बिना हमारी दुआ स्वीकार कर ली जाए। क्योंकि दुआ स्वयं भाग्य का हिस्सा है।

इसी कारण तो नबियों ने दुआ की-

''अय्यूब को याद करो जब उसने अपने रब से दुआ कीः मुझे बीमारी लग गई है, और तू सबसे बढ़कर दया करने वाला है।'' (सूरा-२१, अल अंबिया, आयत-८३)

दुआ स्वीकार हो या न हो, बहरहाल इससे दिल को शान्ति मिलती है, और कठिनाइयों पर धैर्य से काम लेने का साहस बढ़ता है।

एक हदीस में यह भी आता है।

''कोई मुसलमान जब दुआ करता है, अगर उसमें पाप न हो, और न नातेदारों से कटा हुआ हो तो अल्लाह निम्नलिखित तीन चीज़ों में से एक अवश्य देता है। या तो उसकी दुआ तुरन्त स्वीकार कर ली जाती है, या उसे क़ियामत के लिए सुरक्षित कर ली जाती है, या उसके स्थान पर कोई आपत्ति (मुसीबत) दूर कर दी जाती है। लोगों ने कहा, ''तब तो हम बहुत दुआ किया करेंगे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

फरमाया अल्लाह उससे भी अधिक देने वाला है। (देखिए मुस्नद अहमद १११३३)

इससे मालूम हुआ कि दुआ स्वयं एक इबादत है और दूसरी इबादतों की तरह यह इबादत भी केवल अल्लाह के लिए विशेष है। अब अल्लाह तआला को छोड़कर कोई किसी और को पुकारता है। उससे अपनी हाजतें मांगता है, तो एक प्रकार से वह शिर्क करता है। कुरआन में एक स्थान पर हैः

मस्जिदें तो केवल अल्लाह के लिए हैं, अतः अल्लाह के सिवा किसी और को न पुकारो। (सूरे-७२, अल जिन्न, आयत-१८)

''तुम लोग अल्लाह के सिवा जिन्हें पुकारते हो वे तो तुम्हारी तरह ही बन्दे हैं, अतः पुकार लो उनको यदि तुम सच्चे हो, तो उन्हें चाहिए कि वे तुम्हें जवाब दें।'' (सूरा-७, अल आराफ, आयत १९४)

सच तो यह है

''जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो, उन्हें न तुम्हारी सहायता करने का सामर्थ्य प्राप्त है और न वे अपनी ही सहायता कर सकते हैं।'' (सूरा-७, अत-आराफ़, आयत १९७) ''उसे छोड़कर जिनको तुम पुकारते हो, वे तो एक 'कितमीर' (खजूर की गुठली की झिल्ली) के भी मालिक नहीं हैं, यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे, और यदि सुनते तो भी तुम्हारा जवाब न देते, और क़ियामत के दिन वे तुम्हारे शिर्क का इनकार कर देंगे। (अल्लाह की तरह) तुम को कोई खबर देने वाला नहीं।'' (सूरह-३५, फ़ातिर, आयतें १३,१४)

इलयास अलैहिस्सलाम एक रसूल थे, उन्होंने अपनी जाति से कहा

''क्या तुम अल्लाह से डरते नहीं? क्या तमु 'बअ़ल' को पुकारते हो और सबसे अच्छे पैदा करने वाले को छोड़ देते हो? उस अल्लाह को जो तुम्हारा भी रब है, और तुम्हारे अगले पूर्वजों का भी रब है।'' (सूरा-३७, अस-साफफात, आयतें १२३.१२६)

जब यह बात है तो हमारी सारी दुआएं केवल अल्लाह के लिए ही होनी चाहिए। इसलिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विभिन्न परिस्थितियों में तथा विभिन्न समयों के लिए दुआएं बताई हैं। जैसे क़र्ज़ उतारने की दुआ, रोग से शिफा (मुक्ति) पाने की दुआ, यात्रा पर निकलने से पहले की दुआ, किसी कष्ट से निकलने की दुआ इत्यादि। ये दुआएं हदीस की पुस्तकों में मौजूद हैं।

इसलिए एक मुसलमान को चाहिए कि इन दुआओं को याद कर ले और पाबन्दी के साथ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए केवल अल्लाह से दुआ करे। आशा है कि उसकी दुआएं स्वीकार होंगी और उसकी मुरादें पूरी होगी। क़ियामत के दिन बड़ा आश्चर्यजनक दृश्य होगा जब वे जिनको दुनिया में लोग अपनी हाजतों के लिए पुकारते थे, अपने को अल्लाह का साझी ठहराने से इनकार करेंगे, और कहेंगे, ''हमने कब कहा था कि अल्लाह को छोड़कर हमें पुकारो, हम तुम्हारी हाजतों को पूरा करेंगे। हम तुम्हारे इस शिर्क से इनकार कर रहे हैं। हम तो स्वयं अल्लाह से अपनी सफलता और मुक्ति के लिए दुआ करते हैं। भला हम तुम्हें क्या लाभ पहुंचा सकेंगे।

(क़ुरआन की इन्साइक्लो पीडिया)

❑❑❑

इन बातों का इस्लाम धर्म से कोई संबन्ध नहीं

अबू मुआविया सलफी

१. सरूज डूबने के बाद नाखून नहीं काटना चाहिए।

२. घर में नाखून काट कर फैंकने से नुहूसत (अशुभ और बेबर्कती) हो जाती है।

३. घर में मकड़ी के जाले से नुहूसत आती है।

४. घर के मेहमान के जाने के बाद झाड़ू नहीं लगाना चाहिए वरना बरकत चली जाएगी।

५. दूसरे की कंघी लेकर कंघी नहीं करनी चाहिए वरना दोनों में झगड़ा हो जाए गा।

६. टूटा हुआ दर्पण देखने से मुसीबत आती है।

६. रात में दपर्ण न देखो वरना कुछ मुसीबत आ जाएगी।

७. सुबह को पहली बार किसी के चेहरे को देखने को अच्छा या बुरा समझना।

८. बाईं आखं फड़कने से मुसीबत आती है।

९. बैगन को आधा काटने से बच्चे काना पैदा होंगे।

१०. घर में नई नवेली दुल्हन के आने के बाद कोई मर जाए तो दुलहन को मनहूस अर्थात अशुभ समझना।

११. बहू से पहले बेटी पैदा होने पर बहू को मनहूस समझना।

१२. मंगल के दिन को मनहूस समझना।

१३. सफर में निकलने से पहले गाड़ियों के नीचे लेमू रखना।

१४. नई गाड़ी, नई दुकान और अपने घर के दरवाज़े के ऊपर लेमूं और मिर्च लटकाना

१५. घर के चारों कोनों में हरे कपड़े में नारयल लपेट कर लटका देना।

१६. कुछ नंबरों और अंकों को अशुभ समझना।

१७. बिल्ली और कुत्ता के आवाज़ करने या चिल्लाने को मनहूस समझना कि कुछ आफत आने वाली है। सफर के महीने के आख़िरी बुद्धवार को बाबरकत समझना

१९. मुहर्रम और सफर के महीने में शादी न करना।

२०. सफर के महीने के १३ दिनों को बहुत ही मनहूस समझना इसी लिये इन दिनों का नाम तेरा तीज़ा रखा गया है।

२१. कौवा की पुकार को मेहमान के आने की शुभ सूचना समझना

२२. बिल्ली और कुत्ता के आवाज़ करने को मनहूस समझना कि कुछ आफत आने वाली है।

२३. सामने से बिल्ली के गुज़रने को मनहूस समझना

२४. घर पर उल्लू बैठने को मनहूस समझना

२५. अगर उल्लू ने पुकार लगाई तो सुबह तक कुछ न कुछ बुरी खबर मिलेगी।

२६. खाने के बाद पलेट में हाथ धोने से बरकत चली जाती है।

२७. कुर्सी वगैरह पर बैठकर पांव नीचे लटका कर हरकत देने से नुहूसत आती है।

२८. सुबह सवेरे ग्राहक को सौदा उधार न देना।

२९. अज़ान के वक़्त झाड़ू न देना।

३०. अमावस की रात को घर से बाहर न निकलना

इन तमाम बातों का इस्लाम की शिक्षाओं और आस्था से कोई संबन्ध नहीं है। यह सब लोगों की मंघढ़त बातें हैं।

(प्रेस रिलीज़)

अलमाहदुल आली लित-तख़स्सुस फिद-दिरासातिल इस्लामिया में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

१६ अगस्त २०२३

आज स्वतंत्रता दिवस है हर भारतीय चाहे वह दुनिया के किसी भी भाग में हो असीमित खुशियों से सरशार (उन्मत्त) है और प्रिय देश की हर शैक्षणिक संस्थाएं विशेष रूप से दीनी मदर्से व जामिआत स्वतंत्रता दिवस का जश्न बड़े हर्षोउल्लास से मना रहे हैं। स्वतंत्रता दिवस सभी देशवासियों को मुबारक हो। यह दिन वास्तव में अपने देश के निमार्ण एवं विकास के लिये नये संकल्प का दिन है। इन ख्यालात का इज़हार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने १५ अगस्त २०२३ को अल माहदुल आली लित तख़स्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया स्थित अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में मक्का मुर्करमा से आन लाइन संबोधित करते हुये किया।

अध्यक्ष महोदय ने आन लाइन संबोधित करते हुए कहा कि आज़ादी की यह नेमत हमें कैसे मिली? किस से मिली और इतना भव्य देश कैसे गुलाम बन गया यह सोचने का पल है और इसे जानना हर देशवासी विशेष रूप से नई नस्ल के लिये ज़रूरी है क्योंकि इन पथार्थ को जानने के बाद ही हम आज़ादी की असल कद्र व कीमत को समझ सकते हैं हमें इस शुभ अवसर पर यह जानना भी ज़रूरी है कि क़ौमें क्यों तबाह व बर्बाद होती हैं, किस तरह पतन का शिकार होती हैं और परिणाम स्वरूप एक दिन गुलामी की खूनी जंजीरों में गिरफ्तार हो जाती हैं? इतिहास से सीख लेने की ज़रूरत है।

इस अवसर पर ध्वजारोहण के बाद देश गान जनगण और कौमी तराना सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा गाया गया और इस समारोह में मौजूद सज्जनों के बीच मिठाई तक़सीम की गई। इस समारोह में अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया के प्रतिष्ठित अध्यापक प्रिय क्षात्र, कार्य कर्तागण, के अलावा अन्य महत्वपूर्ण हस्तियां भी मौजूद थीं जिन में मौलाना मुफ्ती जमील अहमद मदनी, अध्यापक अल माहदुल आली लित्तखास्सुस फिददिरासातिल इस्लामिया, डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, सूबाई जमीअत अहले हदीस दिल्ली के अमीर मौलाना अब्दुस्सत्तार सफली और जनाब अयाज़ तक़ी के नाम उल्लेखनीय हैं।

(प्रेस रिलीज़ का सारांश)

(प्रेस रिलीज़)

हमारे वैज्ञानिक ग्रहों पर पहुंचने में सफल

दिल्ली २२ अगस्त २०२३

चन्द्रयान-३ की चाँद पर सफल लैंडिंग के यादगार अवसर पर इस मिशन में काम कर रहे वैज्ञानिकों के अलावा हुकूमत और पूरी हिन्दुस्तानी कौम को मैं दिल की गहराई से बधाई पेश करता हूँ और इस पर हर्षोउल्लास व्यक्त करते हुए यही कहूंगा कि देश जिस तेज़ी से स्पेस साइंस व टेक्नालॉजी के मैदान में प्रगति कर रहा है और हमारे वैज्ञानिकों, ने ग्रहों पर कमंदें डाल दी हैं अर्थात ग्रहों पर पहुंचने में सफल हो गये, यह हम सबके लिये गर्व की पूंजी ही नहीं सफलता की एक खुश्खबरी भी है जो हर मैदान में सफलता के झण्डे गाड़ने का हौसला देती है। इन ख्यालात का इज़हार मर्कज़ी जमीअत के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने एक प्रेस रिलीज में किया।

उन्होंने अधिकृत कहा कि यह साइंस और टेक्नालोजी का दौर है साइंसदानों ने अपनी अथक मेहनतों और निरन्तर प्रयासों से चाँद पर कमंदें डाल दीं। हम सब का कर्तव्य बनता है कि हम राष्ट्रीय समुदायिक और व्यक्तिगत जीवन में भी मेहनत, कुर्बानी लगन और निःस्वार्थता के ज़रिये विकास करें निंसदेह हमें इसमें ज़्यादा से ज़्यादा तरक्क़ी के साथ-साथ राष्ट्र व समुदाय के लिये हर मैदान में विकास के रास्ते प्रशस्त करने की ज़रूरत है। यह तरक्की की मंज़िलें मानवता की सफलता के लिये तय की जा रही हैं जिसका तक़ाज़ा है कि इसके साथ ही साथ आपसी भाई-चारा, अम्न व शान्ति, राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सद्भावना और मानवीय सौहार्द को विकसित करने का भी मिशन जारी रखें और मानवता का भूला हुआ सबक फिर याद करें और इस की अहमियत को समझें तभी देश तरक्की करेगा और सहीह अर्थों में हम एक विकसित देश कहलाने के हक़दार हो सकेंगे।

(प्रेस रिलीज़)

रबीउल औवल १४४५ का चाँद नज़र आ गया

दिल्ली, १६ सितंबर २०२३

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २९ सफर १४४५ हिजरी अर्थात १६ सितंबर २०२३ शनिवार को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और ज़ुलहिज्जा के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक १७ सितंबर २०२३ रविवार के दिन रबीउल औवल १४४५ हिजरी की पहली तारीख होगी।

(प्रेस रिलीज़)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की सऊदी अरब के दीनी मामलात के मंत्री महोदय से मक्का मुकर्रमा में मुलाकात

१६ अगस्त २०२३

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी इन दिनों सऊदी अरब की यात्रा पर हैं जहाँ उन्होंने मक्का मुकर्रमा में १३-१४ अगस्त को आयोजित होनी वाली विश्व कांफ्रेन्स में प्रतिभाग लिया। इस कांफ्रेन्स में पचास देशों के लगभग १५० प्रतिष्ठित ओलमा एवं मुफतियों ने शिर्कत की। प्रिय देश भारत से अमीर महोदय के अलावा जिन ओलमाए-ए-किराम ने शिर्कत की उनमें डा० अब्दुल लतीफ किन्दी, मौलाना अब्दुस्सलाम सलफी, मौलाना असअद आज़मी, जमीअत ओलामा-ए-हिन्द के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी, मौलाना मुहम्मद रहमानी, मौलाना अब्दुल मजीद अस्सलाही आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। यह इतिहासिक कांफ्रेन्स सफलतापूर्वक संपन्न हुई इस कांफ्रेन्स में एकता व भाईचारा को विकासित करने और आतंकवाद से निमटने का संकल्प किया गया। सऊदी अरब के इस्लामी मामलात के मंत्री शैख डाक्टर अब्दुल लतीफ आले शैख ने कांफ्रेन्स के प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा सऊदी अरब न्याय, दयालुता, मध्यमार्ग, और इस्लाम के पारदर्शी सन्देश की झण्डावाहक है। इस कांफ्रेन्स का मकसद मुसलमानों के बीच एकता को विकसित करने, आतंकवाद के अंत और अतिवाद से निमटने के लिये सऊदी अरब के मिशन को आगे बढ़ाना है। अमीर महोदय ने कांफ्रेन्स के सफल आयोजन पर सऊदी शासकों शाह सलमान बिन अब्दुल अज़ीज़, युवराज मुहम्मद बिन सलमान आले सऊद और विभिन्न कमीटियों के पदधारियों का शुक्रिया अदा किया। मुलाक़ात के अवसर पर सऊदी अरब के इस्लामी मामलात के मंत्री महोदय शैख अब्दुल लतीफ बिन अब्दुल अजीज़ आले शैख ने मर्कज़ी जमीअत के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की दीनी एवं समुदायिक सेवाओं की प्रशंसा की। प्रेस रिलीज़ के अनुसार इस सफर में अमीर महोदय ने विभिन्न वैशिविक हस्तियों से मुलाकात की जिन में सुप्रिम ओलमा कोन्सिल के सदस्य शैख अब्दुल्लाह बिन सुलैमान अल मनीअ, काबा के इमाम अब्दुर्रहमान अस्सुदैसन, शैख सुलैमान अलरूहैली, शैख सालेह अल सुहैमी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। (पाक्षिक जरीदा तर्जुमान में प्रकाशित प्रेस रिलीज का सारांश १-१५ सितंबर २०२३)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं

नवास बिन समआन रज़ियल्लल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरे बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

मअ्क़िल बिन यसार रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है। (मुस्लिम २६४८)

अबू अय्यूब अनसारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी शख्स के लिये यह जाइज नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज्यादा के लिये मुलाकात छोड़े इस तरह कि जब दोनों का सामना हो जाये तो यह भी मुंह फेर ले और वह भी मुंह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहल करे। (बुखारी ६०७७ मुस्लिम २५६०)

उमर बिन अबू सलमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से कहा ऐ लड़के खाना खाने से पहले बिसिमिल्लाह कहो और अपने दायें हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (बुखारी ५३७६ मुस्लिम २०२२)

अबू बकरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुकाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी ७०८३ मुस्लिम २८८८)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः उमरा और हज्जे मबरूर का बदला जन्नत है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जमाही शैतान की तरफ से आती है, इसलिये जब तुम में से किसी को जमाही आये तो अपनी ताकत भर उसे शैतान की तरफ लौटा दे। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान को जो भी, थकान, बीमारी रंज व गम, तकलीफ पहुचती है यहां तक कि कांटा चुभता है तो अल्लाह इसकी वजह से उसके गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तुम में से किसी

के तौबा कर लेने पर बहुत खुश होता है जैसे तुम में से कोई अपनी गुमशुदा ऊंटनी के पा जाने पर खुश होता है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम उस वक्त तक जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि ईमान न ले आओ, और उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिसके करने से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करने लगो गे? अपने बीच में सलाम को फैलाओ। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पांचों नमाज़ें और एक जुमा से दूसरे जुमा तक और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक इनके दर्मियान में होने वाले गुनाहों के लिये कफ्फारा हैं शर्त यह है कि कबीरा गुनाहों से बचा जाये। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सबसे अफज़ल रोज़ा अल्लाह का महीना मुहर्रम का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारे खिलाफ हथियार उठाया तो वह हम में से नहीं है और जिसने हम को धोखा दिया तो वह हम में से नहीं है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला टूट जाता है मगर तीन चीज़ों की वजह से नहीं टूटता हैः सद-क-ए जारिया, वह ज्ञान जिस से फाइदा उठाया जाये और नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने मुर्दों को लाइलाहा इल्लल्लाह की तलकीन करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ गढ़ा तो उसका ठिकाना जहन्नम है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने नेकी की तरफ बुलाया उसके लिये उसी तरह का बदला है जिसने इस नेकी को अपनाया उनके सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। और जिसने बुराई की तरफ बुलाया तो उसको उसी जैसा गुनाह मिलेगा जिसने इस बुराई पर अमल किया उनके गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अललाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने घरों को कब्रस्तान न बनाओ, बेशक शैतान उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरे बक़रा पढ़ी जाती है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला

अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसकी बुराइयों से उसका पड़ोसी सुरिक्षत न हो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सजदे में बन्दा अपने रब से करीब होता है इस लिये ज्यादा से ज्यादा दुआ करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह क्यामत के दिन कहे गा मेरे जलाल से मुहब्बत करने वाले कहां हैं, उस दिन मैं उनको अपनी छाया में कर लूंगा, उस दिन मेरी छाया के सिवा कोई छाया नहीं होगी। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आप ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में नई बात ईजाद की जो उस से न हो तो वह मरदूद है। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आप ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा महबूब आमाल वह हैं जिनको बराबर किया जाये अगर्चे कम हों। (बुखारी-मुस्लिम) आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः जिस शख्स ने अल्लाह की फरमाबरदारी के लिये नज़र मानी तो चाहिये कि वह उस की फरमाबरदारी करे और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की नज़र मानी तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (बुखारी)

❑❑❑

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.....

पिता का नाम.....

स्थान.....

पोस्ट आफिस.....

वाया.....

तहसील.....

जिला.....

पिन कोड.....

राज्य का नाम.....

मोबाइन नम्बर.....

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस **मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6**

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।